

दिवाली पूजा - सहजयोग की शुरुआत

२९/१०/९५, नारगोल

ये तो हमने सोचा भी नहीं था, इस नारगोल में २५ साल बाद इसतने सहजयोगी एकत्रित होंगे। जब हम यहाँ आये थे तो ये विचार नहीं था कि इस वक्त सहस्रार खाला जाए। सोच रहे थे कि अभी देखा जाय कि मनुष्य की क्या स्थिति है। मनुष्य अभी भी उस स्थिति पर नहीं पहुँचा जहाँ वो आत्मसाक्षात्कार को समझे। हालांकि इस देश में साक्षात्कार की बात अनेक साधू-संतों ने सिद्ध की है और इसका ज्ञान महाराष्ट्र में तो बहुत ज्यादा है कारण यहाँ जो मध्यमार्गी थे जिन्हें नाथ पंथी कहते थे, उन लोगों ने आत्मकल्याण के लिए एक ही मार्ग बताया था; आत्मबोध का, खुद को जाने बगैर आप कोई भी चीज़ प्राप्त नहीं कर सकते हो, ये मैं भी जानती थी। लेकिन उस वक्त जो मैंने मनुष्य की स्थिति देखी वो बहुत विचित्रसी थी। वो जिन लोगों के पीछे भागते थे उनमें कोई सत्यता नहीं। उनके पास सिवाय पैसे कमाने के और कोई लक्ष्य नहीं था और जब मनुष्य की स्थिति ऐसी होती है कि जहाँ वो सत्य को बिल्कुल ही नहीं पहचानता उसे सत्य की बात कहना बहुत मुश्किल है और लोग मेरी बात क्यों सुनेंगे? बार-बार मुझे लगता था कि अभी और भी मानव को भागना चाहिए। किन्तु मैंने देखा कि कलयुग की बड़ी भोर यातनायें लोग भोग रहे हैं। एक तो पूर्वजन्म में जिन लोगों ने अच्छे काम किये थे, उन लोगों को भी वो लोग सता रहे थे। जिन्होंने पूर्वजन्म में बुरे कर्म किये थे। उसमें कुछ ऐसे भी लोग थे जो पूर्वजन्म के कर्मों के कारण बहुत त्रस्त थे, तकलीफ में थे और कुछ लोग ऐसे थे कि जो वही पूर्वजन्म के कर्म लेकर के राक्षसोंसे जैसे संसार में आये और वो किसी को छलने में, सताने में, उसकी दुर्दशा करने में कभी भी नहीं हिचकिचाते थे। तो दो तरह के लोगों को मैंने देखे खास। एक वो जो पीड़ा देते हैं और दूसरे जो पिड़ती है।

अब ये सोचना था कि इसमें से किसकी ओर नज़र करें। जो लोग पीड़ा देते थे वे बहुत अपने को सोचते थे कि 'मैं तो बहुत ही सम्पूर्ण इन्सान हूँ।' उनमें तो ये कल्पना ही नहीं थी कि ये दूसरों को तकलीफ दे रहे हैं, परेशान कर रहे हैं। और दूसरे जो लोग पीड़ित थे वो बर्दाश्त कर रहे थे, शायद मजबूरी की वजह से हो, या उनको कभी भी ये मालूम नहीं था कि इस तरह की जो व्यवहार करता है उसका प्रतिकार करना चाहिए। उसका विरोध करना चाहिए। उस वक्त यही सोच रही थी कि मनुष्य कब ये सोचेगा कि 'हमें बदलना है, हमारे अन्दर एक परिवर्तन लाना है।' क्योंकि दोनो ही अपनी तरफ से खुद को समझा बुझाकर चुके थे। कुछ लोग ज्यादा तकलीफ देते थे और कुछ लोग कम और कुछ लोग ज्यादा तकलीफ बर्दाश्त कर रहे थे और कुछ लोग कम। ऐसी समाज की स्थिति थी। चाहे वो भगवान के नाम पर हो, चाहे वो राष्ट्र के नाम पर हो और चाहे वो राजनैतिक हो या जिसे कहते हैं इकोनोमिकल। किसी की गरिबी तो किसी की बहुत अमिरी।

इस प्रकार, इस देश में एक तरह की धलना चल रही थी। जिसको कि मैं समझती थी कि जब तक मनुष्य बदलेगा नहीं, जब तक वो अपने को पहचानेगा नहीं, जब तक वो अपने गौरव और अपनी महानता को पायेगा नहीं तब तक वो ऐसे ही काम करता रहेगा। ये सब मेरे दिमाग में था ही, बचपन से ही और मैं ये सोच रही थी कि इस मनुष्य को समझना जरूरी है। तो पहले तो मैंने मनुष्यों का बहुत अभ्यास किया, तटस्थ रहकर, साक्षी रूप रहकरके मैंने समझना चाहा कि मनुष्य क्या है, पिछले क्या क्या दोष है। कौनसी कौनसी खराबी हैं और किसलिए वो ये ऐसे सोचता है। तब उस नतीजे पे मैं पहुँची कि मनुष्य के अन्दर एक तो या तो अहंकार बहुत ज्यादा है और या तो उसके अन्दर में प्रति अहंकार जिसे हम कहते हैं कि कंडिशनिंग। इन दोनो की वजह से उसके अन्दर में सन्तुलन नहीं, बैलन्स नहीं। जब तक सन्तुलन नहीं आयेगा तब तक कुण्डलिनी उठेगी कैसे? वो भी एक बड़ी भारी चीज़ है।

लेकिन जब मैं यहाँ नारगोल में आयी तो वो कुछ विचित्र कारणों के कारण। एक बहुत दुष्ट राक्षस यहाँ पर एक अपना शिबिर लगायें बैठा था और हमारे पति को कह कहकर भेजा है कि उनको जरूर भेजिए, जरूर भेजिए। मुझे वो आदमी जरा भी ठीक नहीं लगा। फिर भी पति के कहने से मैं आयी और शायद जिस बंगले में अभी रह रही हूँ, शायद उसी में,वास्तव में वहीं रहे थे। उससे पहले दिन की बात है कि मैं जब एक पेड़ के नीचे बैठे देख रही थी उनका तमाशा तो मैं हैरान हो गयी थी कि ये महाशय सबको मन्त्रित करके मेसमराज्ड कर रहा था। कोई लोग चीख रहे थे। कोई लोग चिल्ला रहे थे। तो कोई लोग कुत्ते जैसे भौंक रहे थे तो कोई जो है शेर जैसे दहाड़ रहे थे। मेरी समझ में आ गया कि ये

इनकी पूर्वयोनी में ले जा रहा था और इनके जो कुछ भी चित्त चेतित है, उसे हम कहते हैं सबकॉन्शस माइंड, उसका जगा रहा था, तब मैं, घबरा गयी। मैंने ऐसे झूठे लोगों को भी पहले देखा था कि ये करते क्या है, ये तो पता होना चाहिए न कि ये करते क्या हैं, किस तरह से क्या धंधा करते हैं। और इन में मैंने एक चीज़ देखा कि ये बड़े भयभीत लोग हैं, इसके साथ बंदूके रहती थी, इसके साथ इनके गार्ड्स रहते थे। मैंने सोचा कि ये अगर कोई परमात्मा का कार्य कर रहे हैं तो इन्हे इन सब चीज़ों की जरूरत क्या है। और बेतहाशा पैसा लूट रहे थे। करोड़ों में इन्होंने पैसे लूटे लोगों से झूठ बोलकर। ये तो दो बातें मेरी नज़र में आयी। मैंने सोचा कि ये तो कलयुग की ही महिमा है कि ऐसे दुष्ट लोग अभी पनप रहे हैं। पर इसका इलाज यही कि जब मनुष्य की चेतना जागृत हो, उसके अन्दर सुबुद्धि आये और वो समझ लें कि ये सब गलत चीज़ है और ये सब करने से कोई लाभ नहीं है। तिसरा मैंने ये देखा कि जिस समाज में मैं रह रही हूँ उस समाज में लोग हर मिनट ऐसा काम करते थे कि जिससे उनका नाश हो जाए। जैसे शराब पीना, औरतों के पीछे भागना और तरह-तरह की चीज़ें। और बहुत ही ज्यादा पैसे का लगाव इन लोगों को है। और बात करते वक्त लगता नहीं था कि वे नैचरल बात कर रहे हैं, कुछ अजीब सा, बन-ठन के ड्रामा करके बत करते थे। मैं सोचती थी कि मनुष्य को क्या हो गया है। ऐसे क्यों ड्रामों में फँसा हुआ है और इस तरह के गलत काम करता है। लेकिन मैं किससे कहती। मैं तो बिल्कुल अकेली थी।

उस वक्त जब हम यहाँ आये तो यही एक उलझन थी कि क्या किया जाय? यहाँ आने पर जब मैंने देखा कि ये राक्षस लोगों को मेस्मराइज कर रहा था तब मेरी समझ में आया कि अब अगर सहस्रार नहीं खोला गया किसी तरह तो न जाने लोग कहाँ से कहाँ पहुँच जाएंगे। और इनके जो असर है, इसके जो साधक हैं, जो परमात्मा को खोज रहे हैं, सत्य को खोज रहे हैं न जाने कहाँ जा सकते हैं। तब देखने के बाद मैं दूसरे दिन सबेरे रातभर समुद्र के किनारे रही। अकेली थी बड़ा अच्छा लगा। कोई कुछ कहने वाला नहीं। और तब मैंने ध्यान में जाकर अपने अन्दर और सोचा सहस्रार खोला जाय। और जैसे मैंने ये इच्छा की कि अब सहस्रार का भ्रमणरंघ्र खुल जाए। ये इच्छा करते ही कुण्डलिनी को मैं अपने अन्दर देखती क्या हूँ कि जैसे टेलिस्कोप होता है उस तरह से खटखट करके ऊपर तक गयी। उसका रंग ऐसा था कि जितने भी यहाँ पर आप लोगों ने दिये लगाये हैं, इन सब दियों का रंग मिला लीजिए। जैसे कि लोहा तपता है तो उसका रंग और तब मैंने देखा उस कुण्डलिनी का बाहर का यन्त्र जो था वो इस तरह से उठता गया। हर एक चक्र पे खटखट आवाज आयी और कुण्डलिनी जाकर ब्रह्मरंघ्र को छेद गयी। तो मेरे छेदने की तो कोई बात नहीं थी। लेकिन मैंने देखा कि विश्व में अब बहुत आसान हो जाएगा। और उस वक्त मुझे ऐसा लगा कि ऊपर से जो कुछ भी शक्ति थी वो मेरे अन्दर पूरी तरह से, एक ठण्डी हवा जैसे चारो तरफ से आ गयी। अब मैं समझ गयी कि अब कार्य को शुरू करने में कोई हर्ज नहीं क्योंकि जो उलझन थी वो खत्म हो गयी। अनिश्चित, बिल्कुल निश्चित हो कर के मैंने सोचा कि अब समय आ गया।

आखिर होगा क्या? ज्यादा से ज्यादा लोग मारेंगे, पिटेंगे। ज्यादा से ज्यादा हसेंगे, मज़ाक करेंगे। और उससे आगे वो सबको मार डालेंगे। इसमें डरने की कोई बात नहीं। ये जो करना ही है। इसी कार्य के लिए हम आये हैं इस संसार में। क्योंकि सामूहिक चेतना को, कलेक्टिव कॉन्शस को जगाना, मैंने सोचा कि जब तक लोग आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त नहीं करते, अपने को नहीं जानते तब तक ये कार्य असंभव है। और सब दुनियाभर की चीज़ें कर लें इससे कोई फायदा नहीं। इसलिए इस कार्य को मैंने सबसे पहले एक काफ़ी बुढ़ी स्त्री थी जो कि हमें बहुत मानती थी, वो पार हो गयी। तब मुझे सन्तोष हुआ। मैंने कहा चलो एक तो पार हुये। इस कलयूग में किसी को पार करना कोई आसान है? जब एक पार हुई तब मुझे लगा, कि हो सकता है कि और बहुत से पार होंगे। और सामूहिक चेतना के लिए चेतना देना तो बहुत आसान था। एक इन्सान को पार कराना बहुत आसान था। एक आदमी को चित् करना बहुत आसान था। पर कलेक्टिवली, सामूहिक के लिए कार्य करने के लिए जो मैंने मनुष्य के बारे में अनुभव किया था उस पर थोड़ासा काम था। काम ऐसा कि जब मैं रुकूँ कि किस आदमी में दुर्गुण है, या कोई तकलीफ है या उसके अन्दर कंडिशनिंग है तो उसको निकालने के लिए क्या करना चाहिए। क्योंकि एक आदमी के लिए एक परेशानी दूसरे को, दूसरी तिसरे को, तीसरी। अगर सामूहिक कार्य करना है तो एक ही जागरण से सबको लाभ होना चाहिए। सबको फायदा होना चाहिए। अभी मैं आपको समझा नहीं सकती क्योंकि कम समय है, कि सामूहिक चेतना का जो कार्य किसी ने आज तक नहीं किया। ये बात सही है। वो मैंने बहुत ध्यान-धारणा से प्राप्त किया।

अपनी कुण्डलिनी को चारों तरफ घूमा के, अपने कुण्डलिनी को बार-बार लोगों पर उसका असर डाल के और बिल्कुल इस मामले में कोई भी नहीं जानता था मेरे अन्दर क्या शक्तियाँ हैं? मैं कौन हूँ? कोई नहीं जानता। हमारे घर में

भी कोई नहीं जानता। और ससूराल में भी कोई नहीं जानता था। मैके में भी कोई नहीं जानता था। और मैंने कभी किसी से बताया नहीं। क्योंकि बताने से भी खोपड़ी में जाना तो आसान चीज़ नहीं है। इन्सान की खोपड़ी ऐसी है, मैंने देखी है। जिसमें तो कोई भी विचार घूसना बहुत मुश्किल है। सब अपने ही घमण्ड बैठे हुए, सब अपने को कुछ न कुछ समझ रहे हैं। अब इनको कौन बतायें? जैसे कबीर ने कहा, 'कैसे समझाऊँ सब जगहन से' मुझे तो लगा अँधा नहीं है पर अज्ञानी है, एकदम अज्ञान का भण्डार। और ये इतना सूक्ष्म ज्ञान इनको कैसे दिया जाए?

लेकिन कुण्डलिनी जब उस लेडी की, उस देवी की जब जागृत हुई तो मैंने देखा कि उसके अन्दर एक सूक्ष्म शक्ति आ गयी। और वो उस सूक्ष्म शक्ति से मुझे समझने लगी। उसके बाद बारह आदमी पार हुए। और पार होने के बाद हैरान हो गए क्योंकि उनकी आँखों में एकदम चमक आ गयी। और वो देखने लगे सब चीज़ को। एक अजीबोगरीब सम्बेदना उनके अन्दर आ गयी। जिससे वो महसूस करने लगे। शुरुआत के बारह लोगों के हर एक चक्र पर मैंने अलग-अलग काम किया। क्योंकि जब नींव में जब चीज़ पड़ती है वो मजबूत होती है। उसकी मजबूती करने के लिए काफी मेहनत करनी पड़ती है। क्योंकि हालांकि उनकी कुण्डलिनी जागृत हो गयी थी। आप जानते हैं कि कुण्डलिनी के जागृत करने के बाद भी उसको ठीक दशा में ले जाने के लिए ध्यान-धारणा आदि करनी पड़ती है। और उसको बिठाना पड़ता है। इन बारह आदमीओं पर मैंने बहुत मेहनत की। और उस मेहनत के फलस्वरूप ये जरूर मैंने जान लिया कि अगर ये बारह आदमियों की बारह प्रकृतियाँ और उनको साथ में बिठा के किस तरह से, कहना चाहिए कि आत्मा की जो प्रकाश शक्ति है उसको किस तरह से संगठित करना चाहिए। जैसे की हम सुई में फूल पिरोते हैं वो समग्रता किस तरह से आनी चाहिए? इन बारह आदमियों की अलग-अलग प्रकृतियों को किस तरह से एक सूत्र में बाँधा जाए? और जब उनकी जागृति हो गयी तब मैंने देखा कि उनके अन्दर, सबके अन्दर एकसूत्रता बँधती जा रही थी। धीरे-धीरे बँधती जा रही थी। थोड़ी बहुत मेहनत भी करनी पड़ी। लेकिन किसीको बताने के लिए, जनता-जनार्दन को बताने के लिए मैंने सोचा अभी उसके लिए अभी आसान नहीं है। लोगों को समझने की बात नहीं है। फिर जहाँगीर हॉल में एक कार्यक्रम का आयोजन किया। वहाँ मैंने बताया कि कितने राक्षस आए, कितने राक्षसिनी आए। ये लोग क्या करेंगे? तो सब घबरा गये। कहने लगे कि अगर ऐसे माताजी बात करेंगी तो इनको कोई भी कैसे मदद करेगा। तो सबने काम से बताया कि ऐसी बातें आप मत करिए, नहीं तो बड़ी मुश्किल हो जाएगी। मैंने कहा, 'अभी तक तो मुझे मारने वाला पैदा नहीं हुआ। और आप लोग निश्चित रहिए।'

धीरे-धीरे ये जो छोटी-छोटी सरिताएं थी सबके अन्दर, छोटी-छोटी नदियाँ थी कुण्डलिनी की उनको मैंने कहा कि, 'आप लोग मेरी कुण्डलिनी पर ध्यान दो।' तो ध्यान करते ही वो निर्विचार हो गये। और निर्विचार होते ही साथ में उनको ये लगे कि मेरे साथ उनका बड़ा तादात है। धीरे-धीरे निर्विचारिता बढ़ने लगी। धीरे-धीरे सामूहिकता का एक नया प्रकाश हुआ। ये पहले मैंने जहाँगीर हॉल में देखा। हिन्दुस्थानी लोग जो हैं, भारतीय लोग जो हैं ये इस भूमि में इसलिए पैदा हुए हैं कि ये बड़े ही धार्मिक हैं। बहुत ही सुन्दर इनका जीवन रहा होगा। क्योंकि हिन्दुस्थान में इतनी मेहनत नहीं करनी पड़ती। बहुत जल्दी लोग पार हो जाते थे। शुरुआत में जरूर थोड़ाबहुत समय लगा। लेकिन परदेस में तो हाथ टूट जाते हैं। किसी की कुण्डलिनी उठाना ऐसा लगता है कि पहाड़ उठाया जा रहा है। और फिर धड़क से नीचे गिर जाती है। उठाओ और फिर धड़क से गिर जाओ। और फिर जब कलेक्टिवली, सामूहिक में तो बड़ी मुश्किल! और अजीबो-गरीब सवाल पूछना, ये और वो, दुनियाभर की बातें। जब मैं उसका जवाब देती तो हैरान हो जाते। ये इतना जानती कैसे हैं! इनको ये सब मालूम कैसे है? बड़ी मेरी परीक्षा करते हैं। क्योंकि अहंकार बहुत ज्यादा है।

अब धीरे-धीरे ऐसी चीज़ें, जैसे लण्डन में पहली मर्तबा सात सहजयोगी आए। वो सातों ही हिप्पी के टाइप और ड्रग्स लेते थे। उनसे वो सहजयोगी बन गये। इसका मतलब ये तो हुआ कि एक तरह का सहारा मिल गया, निश्चिंती हो गयी कि सहजयोग से लोग ड्रग्स छोड़ रहे हैं। ड्रग्स ऑडिक्ट को ठिकाने लगाना कोई आसान बात नहीं! उसमें एक अच्छाई, क्योंकि उन पर जो हमने मेहनत करी उससे एक अनुभव आ गया कि कठिन से कठिन भी कोई इन्सान हों, जब उसकी इच्छा होती है तो उसे योग प्राप्त होना चाहिए, उसे आत्मज्ञान होना चाहिए। इच्छामात्र अगर हो तो वो पार हो जाता है। तब मैं सबसे कहती थी कि आप हृदय से इच्छा करो कि आपको आत्मसाक्षात्कार चाहिए। बस, उसी पर लोग झट से पार हो गये। उसमें अनेक देशों के अनुभव हैं मेरे पास। इससे जैसे रशिया है या यूक्रेन है या रूमानिया इन देशों का मेरे ख्याल से हमारे देशों से कभी सम्बन्ध रहा होगा जबरदस्त। और यहाँ से नाथ पंथी जो हैं, मच्छिंद्रनाथ, गोरखनाथ ये गये होंगे कभी। क्योंकि इनके यहाँ जो चीज़ें मिली, मुझे उससे पता हुआ कि ये लोग कुण्डलिनी के बारे में इसा से भी तीन

सौ साल पहले से जानते हैं। तब ये समझ में आया कि ये लोग इतनी जल्दी पार कैसे हो जाते हैं!

महाराष्ट्र में बहुत काम किया नाथ पंथियों ने और मैंने भी बड़ी मेहनत की। पर दुःख की बात ये है कि जो चीज़ नॉर्थ इंडिया में हम कर पाए वो महाराष्ट्र में अभी भी मैं नहीं कर पाई। समझ में नहीं आता जहाँ पर संतों ने अपना खून बहाया और हर एक महाराष्ट्रीयन को मालूम है की नाथपंथियों ने क्या कार्य किया? और पता नहीं क्यों जो चीज़ मैंने नॉर्थ इंडिया में पाई, पहले तो मैं दिल्ली को बिल्ली ही कहती थी, सालों मेहनत की वहाँ भी लेकिन उसके बाद जो सहजयोगी वहाँ मिले है। जिस तरह सहजयोग फैल रहा है। इससे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। इतना प्रवाह देख कर के ये आश्चर्य होता है कि जहाँ पर इतना संत-साधुओं ने काम किया है, इतनी मेहनत की है और बचपन से हम लोग यही सिखते आए हैं, पढ़ते आए हैं, यहाँ पर सब लोग यही बातें करते हैं उस महाराष्ट्र में सहजयोग उतना गहरा नहीं फैला। जैसा कि नॉर्थ में फैला। इसका क्या कारण हो सकता है? एक ही मुझे लगता है कि जब पहले से ही सब चीज़ मालूम है तो उसके प्रति जो है अवज्ञा हो जाती है। उधर इनडिफरन्स हो जाता है। संस्कृत में एक श्लोक है 'अति परिचयात अवज्ञा' 'संतत गमना अनादरो भवति, प्रयागवासी कृपे स्नानं समाचरेत' कि जब बार-बार आप कहीं जाते हैं, बार-बार आप किसीसे मिलते हैं तो आपका अनादर होने लगता है, फिर आपका आदर नहीं रह जाता। क्योंकि प्रयाग में रहने वाले लोग, अलाहाबाद में रहने वाले लोग गंगाजी में नहाने की जगह, जो त्रिवेणी का संगम है, वो लोग घर में जो कुँआ है उसमें नहाते है। और लोग दुनियाभर से वहाँ जाते हैं, जाकर के वहाँ नहा लेते हैं। यही बात शायद है कि जो इतनी मान्यता सहजयोग को नॉर्थ इंडिया में है। यहाँ भी, ऐसा नहीं कि यहाँ सहजयोगी नहीं, महाराष्ट्र में भी बहुत सहजयोगी हैं और बहुत कार्यान्वित भी हैं पर सहजयोग के प्रति जो समर्पण चाहिए वो मैंने तो कभी नहीं देखा। पता नहीं शायद बढ़ें। समर्पण का मतलब है कि ये हमें सहजयोगी पद जो मिला उस सहजयोगी पद को हम किस तरह से इस्तमाल करें। वो सिर्फ अपने लाभ के लिए, अपनी तकलीफ के लिए, अपने ही परिवार के लिए सोचते हैं या सारे संसार के लिए सोचते हैं ये कुछ समझ में नहीं आता। महाराष्ट्र की जो संस्कृति है और जो महाराष्ट्र के धर्म की इतनी गहन छाप, उस महाराष्ट्र में सहजयोग इतना नहीं फैला है। और गुजरात में जहाँ नारगोल में जहाँ हमने ब्रह्मरन्ध्र खोला वहाँ तो बहुत की प्रॉब्लेम। गुजरात के लोग तो मेरी समझ में ही नहीं आते। बहुत मेहनत की गुजरात में पर सबसे ज़्यादा महाराष्ट्र में मेहनत की है। क्योंकि आज यहाँ महाराष्ट्रीयन लोग बहुत है। मुझे कहना ये है कि सहजयोग को बढ़ाने के लिए सबसे पहले आप ध्यान-धारणा करें। और गहरे, जब गहरे आप उतर जाते हैं तब आपको लगता है कि मैं ही क्यों इसका मज़ा उठाऊँ? और लोग भी इसका मज़ा उठाएँ। और जब ये भावना अन्दर आती है तो सहजयोग फैलता है और उसके बाद मनुष्य जो है अपने जीवन में यही सोचता है कि दूसरों को सुख देना, दुसरों को आनन्द देना इससे बढ़कर और कुछ नहीं। और सब चीज़ों को भूल जाते हैं। यह जब होता है तब सहजयोग फैलता है। रात-दिन वही चिंतन, रात-दिन वही सोचना। इसमें मज़ा आता है।

आज मैं यह देखकर बहुत खुश हुई कि सारे दुनिया से यहाँ लोग आए इसके अलावा और भी लोग जो कहना चाहिए कि परदेस से तो आए हैं और दिल्ली वगैरा से आए हैं कम से कम एक बड़ी मुझे आनन्द की बात लगती है कि इस कठिन जगह आप सब लोग कैसे पहुँचे? यह तो प्रेम की महति है। और यह सिर्फ प्रेम है आपका। ये बहुत बड़ी चीज़ है। लेकिन इसमें बस फर्क ये है कि जिस तरह से सहजयोग है, अब देखिए, कोल्हापूर में कितनी मेहनत की। कोल्हापूर में बहुत मेहनत करी लेकिन कोल्हापूर में सहजयोग बहुत कम है। आश्चर्य की बात है! ऐसा क्यों होता है? उन्होंने कहा पंढरपूर में ८०० सहजयोगी है। पर ऐसा वहाँ नहीं। गाजियाबाद में जाओ तो १५,००००, फिर आप फरिदाबाद में जाओ १६,००० फिर आप हरियाणा में जाओ तो वहाँ २५,०००। वहाँ तो हजारों की बात हैं। और महाराष्ट्र में कि ८०० आदमी यहाँ है, ५०० आदमी वहाँ है, ७०० आदमी वहाँ। इसका कारण क्या है मैं आज तक नहीं समझ पाई। यही अगर सोचना है, यही सोच सकते हैं कि यहाँ पर आत्मज्ञान, आत्म बोध, महानुभाव पंथ आदि अनेक चीज़ें इतनी ज़्यादा असलियत की हो गयी कि अब इधर ध्यान ही नहीं। ऐसे इन लोगों को महाराष्ट्र में पैसे की ललक नहीं। जैसे आप लोगों को गुजरात में, उत्तर प्रदेश में भी, उत्तर भारत में भी काफी पैसों की ललक है। महाराष्ट्र में ये बात नहीं। सुबह से शाम वो भगवान के चार बजे उठकर ध्यान करना, ये करना, वो करना चलेगा। पर उसमें एक तरह निगरानी की बात नहीं। उसमें हृदय से करें, भक्ति से करें। और उस भक्ति को बाँटने की कोशिश करें। ये महाराष्ट्रीयन्स को करना चाहिए। बारह महीने में महाराष्ट्र में ही हमारे गणपतीपूले का प्रोग्राम होता है और महाराष्ट्र में काफी अच्छे सहजयोगी है। गहरे, बहुत गहरे! यहाँ की युवा शक्तियाँ भी बहुत अच्छी है। लेकिन तो भी मैं कहूँगी कि जिस तरह से सहजयोग नॉर्थ में फैला है। अब जहाँ देखो बारह

पत्तों में है। हमारा ससुराल वहाँ है। हर जगह, हर एक गाँव में, हर एक जगह। जहाँ एक आदमी पहुँच गया, सहजयोगी बन गया, जैसे कोई सूखी लकड़ी रहती उसमें जरासी चिनगारी पड़ जाए तो आग लग जाती है इस तरह से। ये आखिर किस कारण जोरो में बह रहा है। समझ में नहीं आता। और जो हो जाते हैं तो कोई सवाल नहीं, कुछ नहीं। पर महाराष्ट्र में सवाल बहुत पुछे क्योंकि पोथियाँ सब पढ़ बैठे हैं। घर में रोज एक-एक को, आप देखिए, किसी महाराष्ट्रीयन्स के यहाँ कम से कम दस गुरुओं के फोटो हैं। उसमें से सच्चे शायद एकाद-दो ही हों। और सब तरह की मूर्तियाँ हैं। गणेशजी का वास है यहाँ। चार यहाँ गणेशजी बैठे हैं। उसे कहने चाहिए, उसे तो अष्टविनायक कहते हैं। पर चार मैं इसलिए कह रही हूँ कि एक-एक गणेश के दो-दो अँसपेक्ट्स या दो-दो तरिके, विशेष अलग-अलग यहाँ पर हैं। अब उसके बारे में महाराष्ट्रीयन्स जानते हैं। वहाँ जाएंगे, गणेश पूजा करेंगे वो। फिर यहाँ आकर तीन देवियों का प्रादुर्भाव है। यह सब होते हुए भी वहाँ जाएंगे। वहाँ मंदिरों में जाएंगे। महालक्ष्मी मंदिर में जाएंगे रोज। वो सब करेंगे। और अब जब सहजयोग में आए हैं तो अब छुट्टी हो गयी। कुछ भी नहीं करना है। ये बड़े आश्चर्य की बात है!

आज क्योंकि बहुत से महाराष्ट्रीयन यहाँ आए हैं। मैं बताना चाहती थी कि देखिए दिल्ली से न जाने कितने लोग, इतने लोग महाराष्ट्र से कभी नहीं जाएंगे। मराठी में इनको 'घरकोंबडे' कहते हैं। माने वो बस अपने ही देश में। बम्बई वाले आपको कभी नहीं दिखाई देंगे पूना में जा कर काम करते हुए। और पूना वाले तो, उनको एक तरह का भूत चिपका हुआ है। मैं इसलिए कह रही हूँ कि ये सब बात खुले आम कहने से कभी-कभी ठीक हो जाती है। खुले आम कहना है कि महाराष्ट्र में जो सहजयोग का ठिकाना हुआ है उससे तो इनके जो आठवले जो हैं वो अच्छे! बकते हैं सिर्फ लेकिन लाखों लोग लाएं। गुजरात का तो क्या कहना। इनको तो ऐसे-ऐसे गुरुओं ने पकड़ें हैं। पर महाराष्ट्रीयन्स को क्या हुआ। जिसमें रामदासस्वामीने सब गुरुओं की चर्चा की और उसमें बताया है, इतना ही नहीं सबसे तो मैं कहूँगी ध्यान दें, इतना साल सहजयोग समझाया। रोज वही गाते हैं। और जो नामदेव ने जो लिखा हुआ है जोगवा का गाना वो रोज जहाँ तुम गाते हैं कि 'हमको माँ तुम योग दो।' पर वो योग करने के लिए तुमको कुछ करना है। आप किसी गाँव में जाओ वहाँ भीड़ हो जाएगी जब मैं जाऊँगी। उसके बाद अगर दो आदमी भी मिल जाए तो बड़ी हैरानी। तो मैं ये कहूँगी कि महाराष्ट्रीयन लोगों को चाहिए कि कुछ इन लोगों के लिए प्रार्थना करें। हवन करें, कुछ न कुछ ऐसी सामूहिक चीज़ करें जिससे महाराष्ट्र की जागृति वैसी हो जाए जैसे उत्तर भारत में हुई, जैसे कि रशिया में हुई। वैसे समर्पित हम वो अच्छे हैं। लेकिन सहजयोग क्यों अभी बढ़ता नहीं ये मेरी समझ में नहीं आया। बहुत धीरे-धीरे बढ़ता है। कोल्हापूर जगह में न जाने कितनी बार पूजाएं हुईं। देवी का मन्दिर बहुत सुन्दर है। सब कुछ है। पर वहाँ पर इतनी गहनता नहीं। उसके लिए सामूहिक रूप में सब लोग ध्यान दें क्योंकि महाराष्ट्र को बहुत बड़ा देश है। बहुत ऊँचा देश है। और धर्म के दृष्टि से जो है सो है, पर आध्यात्म के दृष्टि से बहुत ऊँचा देश है। इसलिए सबको चाहे कि वो महाराष्ट्र के लिए थोड़ीसी जागृति की बातचीत करें। ऐसे कोई झगड़ा नहीं है। कोई परेशानी नहीं है। लेकिन जो सहजयोग बढ़ना चाहिए वो न जाने आजतक तो इतना बढ़ा नहीं। हो सकता है आगे ठीक हो जाए।

अब जो आप लोग इतने यहाँ आए, न जाने क्यों एक अजीब तरह की अनुभूति हुई। किस तरह से पच्चीस साल में इस छोटीसी जगह में आप लोग आए। पच्चीस साल तक हमने मेहनत की ये बात मैं जानती हूँ। मेहनत बहुत की। पर पच्चीस साल के बाद इतने लोग इस नारगोल का माहात्म्य समझेंगे और यहाँ आएंगे ये कोई आश्चर्य की बात नहीं।

'नारगोल' हमारे सहजयोग में मतलब होता है सहस्रार। और जब मैं यहाँ आई। यहाँ की वनश्री देखी वगैरा और बहुत तबियत खुश हो गयी और एकदम अन्दर से जैसे लगा कि इस प्रकृति की किसी बड़ी भारी आशीर्वादित जगह हम आये बहुत अच्छा लगा और जब, वो तो मे का महिना था लेकिन मुझे बिलकुल नहीं गरमी लग रही थी जब सहजयोगी आते हैं तो ठीक है उनकी गर्मी में खिंचती रहती हूँ लेकिन वहाँ; यहाँ कोई सहजयोगी नहीं थे इन दिनों की तरह कुछ गर्मी नहीं लगी और जब सहस्रार खोला तो मैंने देखा कि कोई इसके बारे में जानता भी नहीं है। ज्यादातर गुजराती लोग थे उसमें महाराष्ट्रीयन कम थे और महाराष्ट्र में ही जो चीज़ इतनी किताबें लिखी है कितनी ही किताबें लिखे हैं आप देखियेगा, असली किताबें लिखी हैं, झूठ नहीं है, जो सत्य है वही लिखा हुआ है, चक्रों पर लिखा हुआ है कुण्डलिनी पर लिखा हुआ है, सबकुछ इतना लिखने पर भी यहाँ उस ज्ञान को प्राप्त करने के बाद लोग उसका इस्तेमाल गर करें तो न जाने कितना बढ़ जाएगा, कितना यहाँ सहजयोग बढ़ सकता है। अब हमारी जो सहजयोग की जो प्रणाली है वो इतने लोगों में

फैल गयीं इतनी गहरी पहुँची जो आपने ड्रामा देखा है उससे समझ गये होंगे। इस ड्रामा में उन्होंने दिखा दिया अपने दिमाग से सोचकर के कि 'माँ क्यों आई?' कि सब लोगों ने कहा कि हमने बहुत मेहनत करी। हमने पूरी कोशिश करी कि इन्सान जो है वो आध्यात्म में आ जाएं और परमात्मा की और उसकी नज़र जाए और उसको किसी तरह से योग प्राप्त हो पर कुछ चीज़ बनी नहीं है इसलिए अब हम देवी से कहते हैं कि तुम ही अवतरण लो, तुम ही अवतरण लेकर के जो तुमने ये संसार बनाया है उसको ठीक करो। बिल्कुल पते की बात है। इसमें कोई शक नहीं है और हुआ भी ऐसे है और बना भी ऐसे है। सारा जो कार्य है इस तरह से बड़े सुचारू रूप से बन रहा है और जिस वक्त इस भ्रमरान्ध्र को तोड़ा था उस वक्त सोचा भी नहीं था मैंने कि मेरे जीवित रहते हुए इतना मैं कार्य देख सकूंगी पर ये कुण्डलिनी की महिमा और परम चैतन्य का कार्य है। परम चैतन्य से तो मैं खुद हार गई, पता नहीं क्या करते रहते हैं, हालांकि ये मेरी शक्ति है, लेकिन ये परम चैतन्य आप देख रहे हैं, ये तरह-तरह के फोटोग्राफ्स मेरे बना रहे हैं, तरह-तरह के चमत्कार मेरे दिखा रहे हैं, पचासो तरह के चमत्कार। वैसे मैक्सिको में एक स्त्री थी, जो काम करती न्यूयॉर्क में। वहाँ मुलाकात हुई उसकी। फिर वो पार भी हो गयी थी और मैक्सिको चली गयी थी, वहाँ नौकरी मिल गयी यु.एन. में। उसने चिट्ठी लिखी कि मेरे लड़के की तबियत खराब हो गयी है। छोटा सा है, उमर में बहुत छोटा है और ये बिमारी हमारे खानदान में होती है। जब लोग बिल्कुल बुढ़े हो जाते हैं लेकिन इस बच्चे को इतनी छोटी उमर में हो गयी और अब ये बच नहीं सकता इसके लिए माँ मैं क्या करूँ। ऐसे तीन चिट्ठीयाँ उसने लिखी है। ये परम चैतन्य की बात बता रहे हैं और चौथी चिट्ठी में उसने लिखा कि लड़का अपने आप ठीक हो गया है। वो हॉवर्ड युनिवर्सिटी में पढ़ता था। एकदम ठीक हो गया। उसकी बिमारी एकदम ठीक हो गयी। डॉक्टर ने कहा कि 'किया क्या तुमने? वो कैसे ठीक हो गया?' तो ये परम चैतन्य जो है, इससे काम करते हैं। ये कमाल है तो अब किसी ने पूछा कि 'ये गणेश जी दूध पी रहे हैं, क्या है ये!' मैंने कहा कि भाई, ये परम चैतन्य, कृतयुग में आ गये हैं और कार्य अगरहै। अब ये करे सो काम है। गणेशजी को दूध पिलायेंगे, वो शिवजी को दूध पिलायेंगे, इसको कुछ कह सकते हैं! कौनसी बात है जो परमचैतन्य नहीं कर सकते हैं? हर तरह का वो काम करते हैं।

एक साहब थे कॅनडा में। ये भी काफी पुरानी बात है, तो उन्होंने मुझे चिट्ठी लिखी कि माँ, मेरे पास पैसे नहीं हैं और इस कार्य के लिए मुझे इतना रूपया चाहिए। मैंने कहा, 'अच्छा, कोई बात नहीं। ठीक है।' फिर दूसरे दिन उसने मुझे फोन किया कि 'माँ, मुझे रूपये मिल गये।' मैंने कहा कि वो कैसे? तो उसने कहा था कि मुझे जितने पैसे चाहिए थे उतने एक्झॅक्टली मुझे मिल गये। बहुतों को अनेकों अनुभव आयें। अनेक अनुभव आ रहे हैं क्योंकि परम चैतन्य जो है वो आशीर्वाद स्वरूप है। हर जगह आपको आशीर्वाद देगा, प्रेम देगा, हर तरह से आपको सम्भालेगा, सबकुछ है लेकिन उनकी जो चाल है न उसमें स्पीड आ गयी है, मुझे खुद ही समझ में नहीं आता है कि ये इतने कार्य कैसे कर लेता है। अमेरिका जैसी जगह जहाँ कि लोगों को बिल्कुल भी कहना चाहिए कि सुझबुझ ही नहीं है, अध्यात्म में। इस टाईम अमेरिका में इतना बड़ा कार्यक्रम हुआ, इतने बड़े हॉल में, लोगों को बैठने की जगह नहीं थी और पाँच मिनट में सब लोग पार हो गये, पाँच मिनट में। वही फिर लॉस एंजलिस में भी हुआ। मैं हैरान हो गयी कि ये लोग इतने मूर्ख हैं इनके साथ ऐसे कैसे हो गया है? फिर कॅनडा, वहाँ भी पाँच मिनट में पार हो गये, फिर वहाँ से आगे गये वहाँ भी पाँच मिनट में पार हो गये। कुछ समझ में आया नहीं कि क्यों और क्या है? तो परम चैतन्य की कृतियाँ इतनी बढ़ गयी है। इतने तरह-तरह के हो गये हैं कि कोई समझ नहीं सकता है कि क्या बात है और ये किस तरह से घटित होता है; ये अगर कोई मुझसे पूछे तो मैं नहीं बता पाऊँगी। अब किसीने मेरा फोटो लिया कि मैं चाहती हूँ कि जिस तरह से माँ के बारे में कहा जाता है कि उनके चरणों में चाँद है और सर पर सूरज। वैसा फोटो मुझे चाहिये और वाकई में वैसा फोटो आ गया। आप लोग जिस चीज़ की इच्छा करें वो हो जाता है। इसको क्या कहना चाहिये? इस परम चैतन्य की अपनी शक्ति जो है वो इतनी सुचारू रूप से चलती है और इस कदर जानती है, हर एक की तकलीफ, परेशानियाँ बड़े प्यार से, दुलार से उसको ठीक कर देती है। इस परम चैतन्य की जो महती है आज तक आपने आदिशक्ति की पूजा की है, उसी वक्त आपने इस परमशक्ति की भी, जिसे कि परम चैतन्य कहते हैं, रूह कहते हैं उसकी पूजा की है।

यहाँ पर जब मैं आई तब मैंने उसी वक्त उसी का सब जगह पर प्रादूर्भाव देखा है और सोचा कि यहाँ कुछ न कुछ देवि ने आशीर्वाद दिया हुआ है पहले ही। और वाकई में यहाँ इतने जल्दी, खट से जो ये कार्य हुआ, इतना बड़ा, इतना महान, वो मेरी समझ में नहीं आया कि कैसी इतनी जल्दी क्यों हो गया। ये वही परम चैतन्य है। अब कहिये कि मेरी शक्ति है लेकिन मैं ही मेरी शक्ति को नहीं जानती हूँ ऐसा हाल हो गया है। इतने जोरों में दौड़ रही है कि समझ में नहीं आता कि अब क्या करेगी और आगे क्या करना है। मतलब ये है कि ये जो शक्ति है, ये इतनी अब आतुर है, इतनी.....है कि संसार में

ये जो परिवर्तन है, ग्लोबल ट्रान्सफॉर्मेशन है उसको करने में बिल्कुल देर नहीं करता है, पर जो इसमें आयेंगे और जो इसके लिए करेंगे वो ही प्राप्त कर सकता है।

अब महाराष्ट्र की यही बात मैं आपको बताने जा रही हूँ कि ये शक्ति कार्यान्वित हो रही है। बड़े जबरदस्त और आप लोगों को सबको चाहिए कि इसको पूरी तरह से आप लोग जान ले, समझ लें इस शक्ति को, जो कार्य करने की जो प्रणाली है उसको समझ लें और उसके माध्यम से आप काम कर सकते हैं। अगर वो आप इस्तेमाल करना शुरू कर दें तो न जाने आप कहाँ से कहाँ पहुँच जाएंगे। पर मनुष्य को पार होने के बाद भी, जब तक इसको, वो चीज़ विशेष न समझे तब तक सहजयोग फैलना बड़ा मुश्किल हो जाएगा। रूमानिया देश जिन्होंने कभी आदिशक्ति नाम की क्या चीज़ है सुना ही नहीं; ऐसा मैं सोचती हूँ। वहाँ सहजयोग इतने जोर से फैला है बड़ा आश्चर्य होता है कि वहाँ ५००० सहजयोगी एक शहर में है। अब तो और भी बढ़ गये।

वही चीज़ इस महाराष्ट्र में होना चाहिए और बार-बार मुझे इसकी चिंता लगी रहती है कि ये चीज़ महाराष्ट्र में क्यों नहीं होती है। क्यों नहीं सहजयोग इस तरह से फैल रहा है जैसा फैलना चाहिए। बड़े-बड़े शहर हैं बड़ी-बड़ी जगह है, वहाँ ये कार्य होना है।

तो आज के दिन एक बहुत बड़ी बात हुई है कि पचीस साल इस चीज़ से झूँजते -झूँजते इस दशा में हम आ गये हैं कि यहाँ पर इस जगह आप लोग आये हैं इसका गौर बढ़ाने, इसकी महत्ता बढ़ाने और इसको पुनीत करने मेरे लिए कोई शब्द नहीं है। मैं सोचती हूँ तो मेरा जी भर आता है। आप लोगों के लिए कि कहाँ कहाँ से आप लोग यहाँ आये है।

अनंत आशीर्वाद!